

# 1942 FREEDOM MOVEMENT

On 26th April, 1942 Gandhiji wrote an essay on 'Quit India' in the 'Harijan Patrika'. Thereafter, the notion of Quit India Movement was started on 14th July, 1942, when the Congress Working Committee approved a resolution which declared that 'the immediate ending of British rule in India is an urgent necessity both for the sake of India and for the success of the cause of the United Nations'. On 8th August, 1942, Mahatma Gandhi launched the Quit India Resolution for freedom from British rule during the All India Congress Committee (AICC) meeting at Gowlia Tank Maidan, Mumbai (now known as August Kranti Maidan).

The movement was accompanied by a mass protest on non-violent lines, in which Gandhi called for "an orderly British withdrawal from India". In a stirring speech Gandhiji told the people, "There is a mantra, a short one, that I give you. You imprint it on your heart and let every breath of yours give an expression to it. The mantra is do or die. We shall either be free or die in the attempt.... Every one of you from this moment consider himself a free man or woman and even act as if you are free and no longer under the heel of this imperialism". These words created an "electric atmosphere" in the country.

The failure of the Cripps Mission was another event which triggered off the Quit India Movement.

Following were the salient features of the Quit India Resolution launched by Gandhiji:

1. Hartals (strikes) in all cities and villages throughout the country.
2. All countrymen were promoted to self-made their salt as it is a prime necessity of our life.
3. Students above 16 may leave their college and universities and conduct a non-violence struggle for India's freedom.
4. Every man or woman in the country carry on badge bearing the motto do or die.

In the early hours of 9th August, 1942 all the top leaders, including Gandhiji, Jawaharlal Nehru and Maulana Azad, were arrested, and the Congress was declared an unlawful organization. Despite his failing health and the recent demise of his wife, Gandhiji who was in prison, took on a 21 day fast. The British released Gandhi due to his ill health, but Gandhi continued his opposition and asked for the release of the Congress leaders who were in prison. Gandhiji's last minute exhortation "Do or Die" sank deep in the minds of the people and they were ready to make the supreme sacrifice to defy the government.

A wave of anger swept the country. The protest began in the form of the innumerable strikes, meetings and processions in

the major cities like Bombay, Calcutta, Delhi, Patna and Ahmedabad. And then, the ruthless repressive measures taken by the police and the army, who made the railways, post offices and other government properties their major targets. By the end of 1942, more than 60,000 people were arrested and, about 10,000 were killed. It, however, spread to the rural areas, and went underground in the urban areas.

The British were prepared for this massive uprising. The British acted quickly and arrested thousands of people. Most of the leaders arrested had to spend the next three years in jail, until World War II ended. Apart from filling up jails with rebellious leaders, the British also went ahead and abolished civil rights, freedom of speech and freedom of press.

The main centers of the Quit India movement were Satara of Maharashtra, Tamluk, Contai of Midnapore, Balurghat of West Dinajpur, Balia, Azamgarh of U.P., Naogaon of Assam. Among the notable leaders were Srinath Lal, Nana Patil of Satara, Chaitu Pandey of Balia, Matangini Hazra, Sushil Dhara of Tamluk, Punjab's Fukonani, Assam's Kanaklata Barua. At Midnapore, Bengal, Quit India Movement took form of a mass uprising. The peasant movement organised by Birendranath Shasmal ('Desh Pran') enable the rapid spread of the Quit India Movement. It had deep impacts at Dinajpur, Balurghat, Midnapore, Contai, Tamluk, Patashpur, Bhagwanpur, Sutahata, Nandigram, Mahishadal, Birbhum, 24 Parganas etc. On 29th September 1942, under the leadership of 72 years old Matangini Hazra and Ramchandra Bera a mass of 20,000 seized the court and police station. When police opened fire on this procession many along with Matangini Hazra died. After Matangini the leadership was taken by Ajay Mukherjee, Sushil Dhara, and Satish Samanta and they captured Lalbari. On 17th December 1942 A.D. Ajoy Mukherjee formed the "Tamluk Provisional National Government". They formed an armed force called 'Bidyut Bahaini' and women organization 'Bhagini Sena'.

The significance of Quit India Movement is that the British realized that they would not be able to govern India successfully in the long run and began to think of ways they could exit the country in a peaceful and dignified manner. The Quit India Movement proved the power of the masses.

The Department of Posts is pleased to issue a set of eight Commemorative Postage Stamps on the completion of 75 years of 1942 Freedom Movement.

## Credits:-

Text	: Based on the material available
Stamp / Miniature Sheet/ FDC/Brochure	: Sh. Sankha Samanta
Cancellation Cachet	: Smt. Alka Sharma



भारतीय डाक विभाग  
DEPARTMENT OF POSTS  
INDIA



1942 स्वतंत्रता आन्दोलन  
1942 FREEDOM MOVEMENT



विवरणिका BROCHURE



## 1942 स्वतंत्रता आंदोलन

गांधी जी ने 26 अप्रैल, 1942 को 'हरिजन' पत्रिका में "भारत छोड़ो" पर एक निबंध लिखा था। तत्पश्चात्, 14 जुलाई, 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन की मुहिम की शुरुआत हुई, जब कांग्रेस कार्यकारी समिति ने उस प्रस्ताव को अनुमोदन प्रदान किया, जिसमें यह घोषणा की गई कि भारत के हित में तथा संयुक्त राष्ट्र के ध्येय की सफलता के लिए, भारत में ब्रिटिश राज का तत्काल अंत अत्यंत आवश्यक है। 8 अगस्त, 1942 को महात्मा गांधी ने अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बंबई (मुम्बई) के गोवालिया टैंक मैदान (संप्रति "अगस्त क्रांति मैदान") में बैठक के दौरान ब्रिटिश राज से आजादी के लिए भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत की।

यह आंदोलन अहिंसा की राह अपनाने वाला एक जन आंदोलन था, जिसमें गांधी जी ने "अंग्रेजों को शांतिपूर्वक भारत से वापस जाने" की मांग की। अपने एक जोशीले भाषण में गांधी जी ने लोगों से कहा था "एक मंत्र है, छोटा-सा मंत्र, जो मैं आपको देता हूँ। उसे आप अपने हृदय में अंकित कर लें और आपकी प्रत्येक सांस में उसका उद्घोष हो। वह मंत्र है करो या मरो। या तो हम भारत को आजाद कराएंगे या इस प्रयास में अपनी जान दे देंगे, आप में से प्रत्येक महिला एवं पुरुष इस क्षण से स्वयं को स्वतंत्र माने और ऐसा व्यवहार करे जैसे कि वह स्वतंत्र है, साम्राज्यवाद के अधीन नहीं।" इन शब्दों से देशभर में "बिजली-का-सा" असर हुआ।

क्रिप्स मिशन की विफलता से भी भारत छोड़ो आंदोलन की मुहिम को बल मिला।

गांधी जी द्वारा आरंभ किए गए भारत छोड़ो आंदोलन की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित थीं:-

1. देशभर के सभी शहरों और गांवों में हड़तालें।
2. सभी देशवासियों को स्वयं अपना नमक बनाने को प्रोत्साहित किया गया, क्योंकि यह हमारे जीवन की मूलभूत आवश्यकता है।
3. 16 वर्ष से अधिक उम्र के विद्यार्थियों को अपने स्कूल और विश्वविद्यालय छोड़कर भारत की आजादी के अहिंसक संघर्ष में शामिल होने को कहा गया।
4. देश के प्रत्येक पुरुष और महिला को 'करो या मरो' के आदर्श-वाक्य वाले बैच लगाने को कहा गया।

9 अगस्त, 1942 को प्रातः गांधी जी, जवाहरलाल नेहरू और मौलाना आजाद सहित सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया तथा कांग्रेस को गैर-कानूनी संगठन घोषित किया गया। अपने खराब स्वास्थ्य और हाल ही में हुए अपनी पत्नी के निधन के बावजूद, गांधी जी ने जेल में रहते हुए भी 21 दिन का अनशन किया और अपने संकल्प पर डटे रहे। गांधी जी के खराब स्वास्थ्य को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने गांधी जी को छोड़ दिया, किन्तु गांधी जी ने अपना विरोध जारी रखा तथा कांग्रेस नेताओं, जो जेल में थे, की रिहाई की मांग की। गांधी जी का आह्वान "करो या मरो" लोगों के मनस में घर कर गया तथा वे सरकार का विरोध करने के लिए अपना बलिदान देने को तैयार थे।

देश में आक्रोश की लहर थी। बंबई, कलकत्ता, दिल्ली, पटना और अहमदाबाद जैसे प्रमुख शहरों में अनेक हड़तालें, बैठकें और जुलूस के रूप में विरोध की शुरुआत हुई। इसके बाद, पुलिस और सेना द्वारा बेरहम दमनकारी उपाय किए गए, जिन्होंने रेलवे, डाकघरों और अन्य सरकारी संपत्तियों को अपना मुख्य लक्ष्य बनाया। 1942 के अंत तक, 60,000 से ज्यादा लोगों को हिरासत में लिया जा चुका था और लगभग 10,000 व्यक्ति मारे जा चुके थे। तथापि, यह आंदोलन ग्रामीण क्षेत्रों में भी पहुंच गया था और शहरी क्षेत्रों में यह गुप्त रूप से किया जा रहा था।

ब्रिटिश इस व्यापक बगावत के लिए तैयार थे। उन्होंने तुरंत कार्रवाई की और हजारों लोगों को हिरासत में ले लिया। अधिकांश नेता गिरफ्तार किए जा चुके थे और द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्त होने तक उन्हें अगले तीन वर्ष जेल में व्यतीत करने थे। बागी नेताओं से जेल भरने के अलावा, अंग्रेजों ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और प्रेस की स्वतंत्रता जैसे नागरिक अधिकारों को समाप्त कर दिया।

महाराष्ट्र का सतारा, मिदनापुर का तामलुक, कोन्ताई, पश्चिमी दिनाजपुर का बालूरघाट, उत्तर प्रदेश का बलिया, आजमगढ़, असम का नगांव भारत छोड़ो आंदोलन के मुख्य केन्द्र थे। प्रमुख नेताओं में सतारा के श्रीनाथ लाल, नाना पाटिल, बलिया के चैतू पांडेय, तामलुक की मातांगिनी हाजरा, सुशील धारा, पंजाब की फुकोनानी, असम की कनकलता बरूआ थी। मिदनापुर, बंगाल में भारत छोड़ो आंदोलन ने व्यापक बगावत का रूप ले लिया। बिरेन्द्रनाथ शास्त्राल ("देशप्राण") द्वारा आयोजित किसान आंदोलन ने भारत छोड़ो आंदोलन के प्रसार को गति प्रदान की। इस आंदोलन का दिनाजपुर, बालूरघाट, मिदनापुर, कोन्ताई, तामलुक, पताशपुर, भगवानपुर, सुताहता, नंदीग्राम, महिषादल, बीरभूम, 24 परगना आदि में गहरा प्रभाव पड़ा। 29 सितम्बर, 1942 को 72 वर्षीया मातांगिनी हाजरा और रामचंद्र बेरा के नेतृत्व में 20,000 से अधिक के जनसमूह ने कचहरी और पुलिस थाने पर कब्जा कर लिया। पुलिस द्वारा इस जुलूस पर गोलियां चलाने पर मातांगिनी सहित कई लोगों की मृत्यु हो गई। मातांगिनी के बाद, अजय मुखर्जी, सुशील धारा और सतीश सामंत ने नेतृत्व किया और लालबाड़ी पर कब्जा कर लिया। 17 दिसम्बर, 1942 में अजय मुखर्जी ने "तामलुक अंतरिम राष्ट्रीय सरकार" का गठन किया। उन्होंने "बिद्युत बाहिनी" नाम से एक सशस्त्र सेना तथा "भगिनी सेना" नामक एक महिला संगठन तैयार किया।

भारत छोड़ो आंदोलन का महत्व यह है कि अंग्रेजों ने यह महसूस किया कि वे भारत में लंबे समय तक सफलतापूर्वक शासन नहीं कर सकेंगे और तब उन्होंने शांतिपूर्वक और गरिमापूर्वक तरीके से देश से प्रस्थान करने के बारे में सोचना आरंभ कर दिया। भारत छोड़ो आंदोलन ने जनसामान्य की शक्ति का प्रमाण दिया।

डाक विभाग, 1942 स्वतंत्रता आंदोलन के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आठ स्मारक डाक टिकटों का एक सेट जारी करके प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ	:	उपलब्ध सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/मिनियेचर शीट/	:	श्री शंख सामंत
प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका	:	
विरूपण	:	श्रीमती अलका शर्मा



### TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा (8)
Denomination	:	500 p (8)
मुद्रित डाक टिकटें	:	5.0 लाख प्रत्येक
Stamps Printed	:	0.5 million each
मुद्रित मिनियेचर शीट	:	1.0 लाख
Miniature Sheet Printed	:	0.1 million
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक
Printer	:	India Security Press, Nashik

The philatelic items are available for sale at [http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY\\_3D.html](http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html)

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00